बात लिखी, सो भगवान्‌की कृपासे स्वभावके दोषोंका नष्ट हो जाना कौन बड़ी बात है। उनकी कृपासे असम्भव भी सम्भव हो जाता है। दोष दीखनेकी बात लिखी, सो भगवान्‌में तो कभी किसी दोषकी कल्पना ही नहीं है। उनमें जो कुछ है, सब भगवान्-ही-भगवान् है।

मुझमें कहीं किसीको दोष दिखायी दे तो वह ठीक ही है। मैं अपनी ओर देखता हूँ तो मालूम होता है—दोषोंसे भरा हुआ हूँ। जिनको मुझमें गुण दीखते हैं—या दोष नहीं दीखते—यह तो उनकी राग या प्रेममयी आँखोंका गुण है, मेरा गुण नहीं। मुझमें तो इतने दोष हैं कि उतने कोई देख ही नहीं सकता। (पुराने पत्रोंसे संगृहीत)

श्रीश्रीराम-नाम-माहात्म्य

(लेखक—महात्मा श्रीसीतारामदास ओंकारनाथ महाराज)

[श्रीरामाङ्कके पृष्ठ २४ से आगे]

ब्रह्मपुराण—

प्रमादादपि संस्पृष्टो यथानलकणो दहेत्।
तथौष्ठपुटसंस्पृष्टं रामनाम दहेदघम्॥

विष्णुपुराण—

प्रसङ्गेनापि श्रीरामनाम नित्यं वदन्ति ये।
ते कृतार्था मुनिश्रेष्ठ सर्वदोषाद् गताः सदा॥

तत्रैव ब्रह्मोक्तिः—

अहं च शंकरो विष्णुस्तथा सर्वे दिवौकसः।
रामनामप्रभावेण सम्प्राप्ताः सिद्धिमुत्तमाम्॥
सा जिह्वा रघुनाथस्य नामकीर्तनमादरात्।
करोति विपरीता या फणिनो रसना समा॥
रामेति नाम यच्छ्रोत्रे विश्रम्भाज्जायते यदि।
करोति तत्पापदाहं तूलं वह्निकणो यथा॥

'जैसे प्रमाद (भूल) से भी स्पर्श करनेपर आगकी चिनगारी जला देती है, उसी प्रकार केवल ओष्ठ-पुटके साथ स्पर्श होनेपर रामनाम पापको दग्ध कर देता है।'

'हे मुनिश्रेष्ठ ! जो नित्य प्रसङ्गवश भी श्रीरामनामका उच्चारण करते हैं, वे सदा सब दोषोंसे मुक्त होकर कृतार्थ हो जाते हैं।'

ब्रह्माजी कहते हैं—

'मैं, शंकर, विष्णु और सारे देवगणने रामनामके प्रभावसे श्रेष्ठ सिद्धि प्राप्त की है।'

'जो जिह्वा आदरपूर्वक रघुनाथका नाम-कीर्तन करती है, वही यथार्थ जिह्वा है; उसके विपरीत जो जिह्वा नाम-कीर्तन नहीं करती, वह सर्पकी रसनाके समान है।'

'जैसे अग्निकी चिनगारी रुईको जला देती है, उसी प्रकार जिसके कानमें राम-नाम यदि अनायास भी प्रविष्ट हो जाता है तो उसके सारे पापोंको समूल दग्ध कर देता है।'

विष्णोरेकैकनाम्नो हि सर्ववेदाधिकं फलम्।
तादृङ्नामसहस्रेण रामनाम समं मतम्॥
श्रीरामेति परं नाम रामस्यैव सनातनम्।
सहस्रनामसदृशं विष्णोर्नारायणस्य च॥
त्रिवर्णं रामनामेदं वर्णानां कारणं परम्।
ये स्मरन्ति सदा भक्त्या ते पूज्या भुवनत्रये॥
अविकारी विकारी वा सर्वदोषैकभाजनः।
परमेशपदं याति रामनामानुकीर्तनात्॥

'विष्णुका एक-एक नाम सब वेदोंसे अधिक फल प्रदान करनेवाला है। वैसे सहस्र नामोंके सदृश एक रामनाम है।

'श्रीराम-नाम श्रीरामका सनातन श्रेष्ठ नाम है। यह विष्णु और नारायणके सहस्रनामके तुल्य है।

'यह त्रिवर्ण रामनाम सर्ववर्णोंका परम कारण है। जो भक्तिपूर्वक इसका सदा स्मरण करते हैं, वे त्रिभुवनमें पूज्य हो जाते हैं।

'विकारी हो अथवा अविकारी, नहीं-नहीं, सब दोषोंसे युक्त पुरुष भी रामनामका कीर्तन करनेसे परमेश्वरके परम पदको प्राप्त होता है।'

पद्मपुराण—

जपतः सर्ववेदांश्च सर्वमन्त्रांश्च पार्वति ।
तस्मात् कोटिगुणं पुण्यं रामनाम्नैव लभ्यते ॥
प्राणप्रयाणसमये रामनाम सकृत्स्मरेत् ।
स भित्त्वा मण्डलं भानोः परं धामाभिगच्छति ॥

तत्रैव—

विष्णुनारायणादीनि नामानि चामितान्यपि ।
तानि सर्वाणि देवर्षे जातानि रामनामतः ॥

तत्रैव—

मङ्गलानि गृहे तस्य सौभाग्यानि च भारत ।
अहोरात्रं च येनोक्तं राम इत्यक्षरद्वयम् ॥

तत्रैव—

गङ्गा सरस्वती रेवा यमुना सिन्धुपुष्करे ।
केदारे तूदकं पीतं राम इत्यक्षरद्वयम् ॥

तत्रैव—

तेन दत्तं हुतं तप्तं सदा विष्णुः समर्चितः ।
जिह्वाग्रे वर्त्तते यस्य राम इत्यक्षरद्वयम् ॥

'हे पार्वति ! समस्त वेदोंका पाठ और सभी मन्त्रोंका जप करनेवालेको भी उससे कोटिगुना पुण्य रामनामसे ही प्राप्त हो जाता है। जो मनुष्य प्राणोंके निकलनेके समय एक बार भी रामनामका स्मरण कर लेता है, वह सूर्यमण्डलको भेदकर परमधामको जाता है ।'

'हे देवर्षे ! विष्णु-नारायण आदि भगवान्के अनन्त नाम हैं, ये सब नाम रामनामसे उत्पन्न हुए हैं ।'

''हे भारत ! जो मनुष्य रात-दिन 'राम'—इन दो अक्षरोंका उच्चारण करता है, उसके घरमें सब प्रकारके मङ्गल तथा सारे सौभाग्य उपस्थित होते हैं ।''

''जिसने 'राम'—इन दो अक्षरोंका जप किया, उसने गङ्गा, सरस्वती, रेवा, यमुना एवं सिन्धु नदियों, पुष्कर तीर्थ तथा केदारक्षेत्रके पवित्र जलका पान कर लिया ।''

''जिसके जिह्वाग्रपर 'राम'—ये दो अक्षर निरन्तर वर्तमान रहते हैं, उसने नित्य दान, होम, तपस्या तथा विष्णुकी अर्चना कर ली ।''

तत्रैव—

अहो भाग्यमहो भाग्यमहो भाग्यं पुनः पुनः ।
येषां श्रीमद्रघूत्तमनाम्नि संजायते रतिः ॥
रामनामांशतो जाता ब्रह्माण्डाः कोटिकोटिशः ।
रामनाम्नि परे धाम्नि संस्थिताः स्वामिभिः सह ॥
स्वाभाविकी तथा ज्ञानक्रियाद्याः शक्तयः शुभाः ।
रामनामांशतो जाताः सर्वलोकेषु पूजिताः ॥
विष्णुनारायणादीनि नामानि चामितान्यपि ।
तानि सर्वाणि देवर्षे जातानि रामनामतः ॥
सर्वेषां हरिनाम्नां हि वैभवं रामनामतः ।
ज्ञातं मया विशेषेण तस्माच्छ्रीनाम संजप ॥
रुद्रो दिशति यन्मन्त्रं यस्य नाम महद् यशः ।
यस्य नास्त्युपमा क्वापि तं रामं राघवं भजे ॥
सर्वपापविनिर्मुक्ता नाममात्रैकजल्पकाः ।
जानकीवल्लभस्यासि धाम्नि गच्छन्ति सादरम् ॥
दुर्लभं योगिनां नित्यं स्थानं साकेतसंज्ञकम् ।
सुखपूर्वं लभेत् तत्तु नामसंराधनात् प्रिये ॥

'जिनका श्रीरघुनाथजीके नाममें अनुराग उत्पन्न हो जाता है, उनका भाग्य प्रशंसनीय है, वे अत्यन्त सौभाग्यशाली हैं, उनके समान भाग्यवान् कोई नहीं है ।

'कोटि-कोटि ब्रह्माण्ड रामनामके अंशसे उत्पन्न हुए हैं । रामनामरूप परमधाममें उसी नामके अंशसे उत्पन्न एवं सर्वलोकपूजित ज्ञान, क्रिया आदि भगवान्की स्वरूपभूता मङ्गलमयी शक्तियाँ अपने स्वामियोंके साथ विराजमान हैं । देवर्षे ! भगवान्के विष्णु, नारायण आदि अन्य असंख्य नाम भी सब-के-सब राम-नामसे ही प्रादुर्भूत हुए हैं । (भगवान् शंकर कहते हैं—) समस्त हरिनामोंकी सामर्थ्य निश्चयपूर्वक रामनामसे है, यह मैं विशेषरूपसे जानता हूँ; इसीलिये श्रीरामनामका ही जप उत्तम रीतिसे करो ।

'रुद्र जिनके मन्त्रका (काशीमें) उपदेश करते हैं, जिनका नाम महान् यशस्वी है तथा जिनकी उपमा कहीं नहीं है, उन्हीं राघव रामका मैं भजन करता हूँ ।

'केवल एकमात्र नामजप करनेवाला मनुष्य सारे पापोंसे विशेषरूपसे मुक्त होकर श्रीजानकीवल्लभके नित्य साकेत-धाममें आदरपूर्वक गमन करते हैं ।

'प्रिये ! नित्य साकेत-धाम योगियोंके लिये भी दुर्लभ है । भक्तजन नामकी आराधनाके फलस्वरूप उसे सुखपूर्वक प्राप्त कर लेते हैं ।'

पद्मपुराणके क्रियायोगसारमें—

रामेति सततं नाम पठ्यते सुन्दराक्षरम् ।
रामनाम परं ब्रह्म सर्ववेदाधिकं फलम् ॥
समस्तपातकध्वंसि स शुकस्तत्तदापठत् ।
नामोच्चारणमात्रेण तयोश्च शुकवेदयोः ॥

विनष्टमभवत् पापं सर्वमेव सुदारुणम् ।
रामनामप्रभावेण तौ गतौ धाम सत्वरम् ॥
तुलसी मस्तके यस्य शिला हृदि मनोहरा ।
मुखे कर्णेऽथवा रामनाम मुक्तस्तदैव हि ॥
दंष्ट्रिदंष्ट्राहतो म्लेच्छो हरामेति पुनः पुनः ।
उक्त्वापि मुक्तिमाप्नोति किं पुनः श्रद्धया गृणन् ॥
भवबन्धच्छिदे तस्यै स्पृहयामि न मुक्तये ।
भवान् प्रभुरहं दास इति यत्र विलुप्यते ॥

'रामनाम परब्रह्मरूप है, सम्पूर्ण वेदोंसे भी अधिक फल देनेवाला है, एक शुकने सुन्दर अक्षरोंसे युक्त तथा समस्त पापोंका नाश करनेवाले रामनामका रटन किया । इस नामके उच्चारणमात्रसे ही उस शुकके और उसे पालनेवाली वेश्याके सारे भयंकर पाप नष्ट हो गये । रामनामके प्रभावसे वे दोनों शीघ्र परमधामको चले गये ।

'जिसके मस्तकपर तुलसी, हृदयपर मनोहर शालग्रामशिला तथा मुखमें अथवा कानमें रामनाम हो, वह तत्काल मुक्त हो जाता है । शूकरके दन्तके आघातसे बारंबार 'हराम' कहनेपर भी मृत म्लेच्छ मुक्तिको प्राप्त हुआ था । फिर श्रद्धापूर्वक नाम लेनेसे मुक्ति प्राप्त हो तो इसमें संदेह ही क्या है ?

'तुम प्रभु हो, मैं दास हूँ'—यह सम्बन्ध जहाँ विलुप्त हो जाता है, भव-बन्धनको काटनेवाली उस मुक्तिकी मैं इच्छा नहीं करता ।'

पद्मपुराण, उत्तरखण्डमें—

मुमूर्षोर्मणिकर्ण्यां तु अर्द्धोदकनिवासिनः ।
अहं दिशामि ते मन्त्रं तारकं ब्रह्मवाचकम् ॥
ॐ श्रीराम राम रामेत्येतत्तारकमुच्यते ।
अतस्त्वं जानकीनाथ परं ब्रह्म विनिश्चितम् ॥
रामान्नास्ति परो देवो रामान्नास्ति परं व्रतम् ।
नहि रामात्परो योगो नहि रामात्परो मखः ॥
एको देवो रामचन्द्रो व्रतमेकं तदर्चनम् ।
मन्त्रोऽप्येकश्च तन्नाम शास्त्रं तद्ध्येव तत्स्तुतिः ॥
ब्रह्मविष्णुमहेशाद्या यस्यांशा लोकसाधकाः ।
तमादिदेवं श्रीरामं विशुद्धं परमं भजे ॥

शिवजी कहते हैं—'मणिकर्णिकाघाटपर आधा शरीर गङ्गाजलमें डालकर पड़े हुए मुमूर्षु (मरणासन्न) व्यक्तिके कानोंमें ब्रह्मवाचक तुम्हारे तारक मन्त्र (श्रीरामनाम) का मैं उपदेश करता हूँ ।

'ॐ श्री राम राम राम'—यही तारक मन्त्र है, अतएव हे जानकीनाथ ! तुम निश्चय ही परमब्रह्म हो ।

'श्रीरामसे श्रेष्ठ देवता नहीं, श्रीरामकी भक्तिकी अपेक्षा श्रेष्ठ व्रत नहीं, श्रीरामकी भक्तिसे बढ़कर कोई योग नहीं तथा श्रीराम-भक्तिसे बढ़कर कोई याग नहीं है ।

'श्रीरामचन्द्र ही एकमात्र आराध्य हैं, उनकी अर्चना एकमात्र व्रत है, उनका नाम एकमात्र मन्त्र है और उनकी स्तुति ही एकमात्र शास्त्र है । लोकमें सिद्धि देनेवाले ब्रह्मा, विष्णु और महेश्वर आदि देवता जिनके अंश हैं, मैं उन्हीं विशुद्ध आदिदेव परमात्मा श्रीरामका भजन करता हूँ ।'

शिवपुराणमें—

श्रीरामनाम निखिलेश्वरमादिदेवं
धन्या जनाः क्षितितले सततं स्मरन्ति ।
तेषां भवेत् परममुक्तिरयत्नतस्तथा
श्रीरामभक्तिरचला विमला प्रसाददा ॥
रामनाम सदा सेव्यं जपरूपेण नारद ।
क्षणार्द्धं नामसंहीनः कालः कालातिदुस्सहः ॥

श्रीमद्भागवतपुराणमें—

यस्यामलं नृपसदस्सु यशोऽधुनापि
गायन्त्यघघ्नमृषयो दिगिभेन्द्रपट्टम् ।
तं नाकपालवसुपालकिरीटजुष्ट-
पादाम्बुजं रघुपतिं शरणं प्रपद्ये ॥
(९ । १० । २१)

पुरुषो रामचरितं श्रवणैरुपधारयन् ।
आनृशंस्यपरो राजन् कर्मबन्धैर्विमुच्यते ॥
(९ । ११ । २३)

'श्रीरामनाम अखिल जगत्का ईश्वर, आदिदेव है । पृथ्वीतलपर वे नर धन्य हैं, जो निरन्तर इसका स्मरण करते हैं । उनको बिना यत्नके ही परम मुक्ति तथा प्रसन्नता प्रदान करनेवाली निर्मल एवं अचला श्रीरामभक्ति प्राप्त होती है ।

'हे नारद ! जपके रूपमें रामनाम सर्वदा सेवनीय है । नाम-शून्य अर्द्धक्षणका समय काल (मृत्यु) की अपेक्षा भी अति दुस्सह है ।'

'भगवान् श्रीरामका निर्मल यश समस्त पापोंको नष्ट कर देनेवाला है । वह इतना फैल गया है कि दिग्गजोंका श्यामल शरीर भी उसकी उज्ज्वलतासे चमक उठा है । आज भी बड़े-बड़े ऋषि-मुनि राजाओंकी सभामें उसका गान करते रहते

हैं। स्वर्गके देवता और पृथ्वीके नरपति अपने कमनीय किरीटोंसे उनके चरण-कमलोंकी सेवा करते रहते हैं। मैं उन्हीं रघुवंश शिरोमणि भगवान् श्रीरामचन्द्रकी शरण ग्रहण करता हूँ।

'हे राजन्! जो पुरुष रामचरितको बार-बार श्रवण करके धारण कर लेता है, वह सहृदयताके परायण होकर कर्म-बन्धनोंसे मुक्त हो जाता है।'

नारदीय पुराणमें—

प्रातर्निशि तथा संध्यामध्याह्नादिषु संस्मरन्।
श्रीमद्रामं समाप्नोति स्वच्छः पापक्षयं नरः॥
रामसंस्मरणाच्छीघ्रं समस्तक्लेशसंक्षयम्।
मुक्तिं प्रयाति विप्रेन्द्र तस्य विघ्नो न बाधते॥

नारद उवाच

सर्वेषां साधनानां च संदृष्टं वैभवं मया।
परंतु नाम माहात्म्यकलां नार्हन्ति षोडशीम्॥
भवतापि परिज्ञातः सर्ववेदार्थसंग्रहः।
नाम्नः परं क्वचित्तत्त्वं दृष्टं सत्यं वदस्व वै॥
बहुधापि मया पूर्वं कृतो यत्नो महामुने।
नैव प्राप्तः परानन्दसागरो जन्मकोटिभिः॥
यावच्छ्रीरामनाम्नस्तु प्रभावो वै परात्परः।
नोऽभ्यस्तो हृदये ब्रह्मन् तावन्नानार्थनिश्चयः॥

'प्रातः, रात्रिमें, संध्याके समय और मध्याह्न आदिमें श्रीरामको स्मरण करके मनुष्य निर्मल होकर पापमुक्त हो जाता है।

'हे विप्रेन्द्र! रामके सम्यक् चिन्तनसे क्लेश-समूह सत्वर नष्ट हो जाते हैं, कोई विघ्न उसे बाधा नहीं डाल सकता और उसे मुक्ति-लाभ हो जाता है।'

नारदजी बोले—'मैंने सब साधनाओंकी सामर्थ्यको सम्यक्‌रूपसे देखा है, किंतु वे सब (मिलकर) नाम-माहात्म्यके सोलहवें अंशके तुल्य भी नहीं हैं।

'आप भी तो सब वेदोंके अर्थ-संग्रहसे परिचित हैं, क्या आपने नामसे बढ़कर किसी तत्त्वको देखा है? सत्य-सत्य कहिये।

'हे महामुने! पहले मैंने भी अनेक यत्न किये थे, किंतु परमानन्दसागर कोटि जन्ममें भी प्राप्त नहीं हुआ।

'हे ब्रह्मन्! जबतक श्रीरामनामका सर्वश्रेष्ठ प्रभाव हृदयमें नहीं जगता, तभीतक मनुष्य नाना प्रकारके अर्थोंका निश्चय करता है।'

मार्कण्डेयपुराणमें—

वेदानां सारसिद्धान्तं सर्वसौख्यैककारणम्।
रामनाम परं ब्रह्म सर्वेषां प्रेमदायकम्॥
तस्मात् सर्वात्मना रामनाम माङ्गल्यकारणम्।
भजध्वमवधानेन त्यक्त्वा सर्वंदुराग्रहान्॥

अग्निपुराणमें—

प्रातर्यच्चापराह्णे च मध्याह्ने च तथा निशि।
कायेन मनसा वाचा कृतं पापं दुरात्मना॥
परं ब्रह्म परं धाम पवित्रं परमं च यत्।
रामनामजपाच्छीघ्रं विनष्टं भवति ध्रुवम्॥

भविष्योत्तरपुराणमें—

भजस्व कमले नित्यं नाम सर्वेशपूजितम्।
रामेति मधुरं साक्षान्मया संकीर्त्यते हृदि॥
गमिष्यन्ति दुराचारा निरयं नात्र संशयः।
कथं सुखं भवेद्देवि रामनामबहिर्मुखे॥
कायेन मनसा वाचा सुमहद्दुष्कृतं कृतम्।
राम रामेति संकीर्त्य सद्यस्तस्माद्विमुच्यते॥

'चारों वेदोंका सार-सिद्धान्त, सब सुखोंका एकमात्र कारण और सबको प्रेम प्रदान करनेवाला रामनाम ही परब्रह्म है। अतएव मन, वचन और कर्मसे सावधानीपूर्वक सारे दुष्ट अभिनिवेशोंको त्यागकर कल्याणकारी रामनामका भजन करो।'

'प्रातः, मध्याह्न, अपराह्ण और रात्रिमें तन-मन-वाणीके द्वारा किसी भी दुरात्माके किये हुए पाप, उस राम-नामके जपसे शीघ्र ही नष्ट हो जाते हैं, जो परब्रह्म, परमधाम, पवित्र और सर्वश्रेष्ठ है।'

'हे कमले! सर्वेश्वर भगवान् शंकरके द्वारा पूजित राम-नामका नित्य भजन करो। मैं साक्षात् मधुर रामनामका हृदयमें संकीर्तन करता हूँ।

'दुराचारी लोग नरकमें जायँगे, इसमें संदेह नहीं है। हे देवि! रामनामसे बहिर्मुख व्यक्ति कैसे सुख पा सकता है।

''काय-मन और वाणीसे यदि अतिशय भीषण पाप किया गया हो, तो भी मानव 'राम'नामका संकीर्तन करके तत्काल उससे मुक्त हो सकता है।''

ब्रह्मवैवर्त्तपुराणमें—

अम्बरीष महाभाग शृणु मद्वचनं परम्।
सर्वोपद्रवनाशार्थं कुरु श्रीरामकीर्तनम्॥

तत्रैव—

रामनामसमं चान्यत् साधनं प्रवदन्ति ये ।
ते चण्डालसमाः सर्वे सदा रौरववासिनः ॥
नाम्नां सहस्रं दिव्यानां स्मरणे यत्फलं लभेत् ।
तत्फलं लभते नूनं रामोच्चारणमात्रतः ॥
राम नारायणानन्त मुकुन्द मधुसूदन ।
कृष्ण केशव कंसारे हरे वैकुण्ठ वामन ॥
इत्येकादश नामानि पठेद् वा पाठयेद् यतिः ।
जन्मकोटिसहस्राणां पातकादेव मुच्यते ॥

लिङ्गपुराणमें—

वृथालापे कृते व्रीडा येषां नायाति सत्वरम् ।
हित्वा श्रीरामनामेदं ते नराः पशवः स्मृताः ॥
स्मर्तव्यं हि सदा रामनाम निर्वाणदायकम् ।
क्षणार्द्धमपि विस्मृत्य याति दुःखालयं जनः ॥

'हे महाभाग अम्बरीष ! मेरे श्रेष्ठ वचनको सुनो और सब प्रकारके उपद्रवके नाशके लिये श्रीरामनामका कीर्तन करो ।

'जो लोग अन्य किसी साधनको रामनामके समान बतलाते हैं, वे सब चाण्डालके समान हैं और सदा नरकगामी होते हैं।

'मानव दिव्य सहस्रनामके स्मरणसे जिस फलको प्राप्त करता है, उस फलको वह केवल रामनामके उच्चारणसे प्राप्त कर सकता है ।'

'राम, नारायण, अनन्त, मुकुन्द, मधुसूदन, कृष्ण, केशव, कंसारि, हरि, वैकुण्ठ और वामन—इन एकादश नामोंका पाठ करने या करानेसे संयमी पुरुष खरबों जन्मके पापोंसे मुक्त हो जाता है ।'

'इस रामनामको छोड़कर निरर्थक बातें करनेमें जिनको तत्काल लज्जा नहीं आती, वे मानव पशु समझे जाते हैं । निश्चय ही निर्वाणप्रद रामनाम सर्वदा स्मरणीय है, मनुष्य आधा क्षण भी उसे भूलकर दुःखालयमें जाता है अर्थात् अत्यन्त दुःखको प्राप्त होता है ।' (क्रमशः)

सदाचार

[पूज्यपाद योगिराज अनन्तश्री देवरहवा बाबाका उपदेश]

(प्रेषक—श्रीरामकृष्णप्रसादजी ऐडवोकेट)

फूलोंमें जो स्थान सुगन्धका है, फलोंमें जो स्थान मिठासका है, भोजनमें जो स्थान स्वादका है, ठीक वही स्थान जीवनमें सदाचारका है । सदाचारके बिना जीवन फीका, नीरस और व्यर्थ है । इसलिये सदाचारका जीवनमें विशेष महत्त्व है । सदाचारी विद्वान् न हो तो कोई बात नहीं; लेकिन विद्वान् यदि सदाचारी न हो तो वह विशेष निन्दाका पात्र होता है । रावण विद्वान् था तथा अनेकानेक गुणोंसे युक्त था, लेकिन सदाचारका पालन न करनेसे वह निन्दाका पात्र बन गया ।

जीवनको सुन्दर, सुखी और सफल बनानेके लिये अन्यान्य योग्यताओंके साथ-साथ सदाचारकी विशेष आवश्यकता है । जैसे बिना मुकुटके कोई राजा नहीं माना जा सकता, राजाके लिये मुकुट धारण करना जैसे अनिवार्य है, वैसे ही जीवनको सुखी एवं समृद्धिशाली बनानेके लिये सदाचारी होना अत्यन्त आवश्यक है । सदाचारका अभिप्राय केवल सच्चरित्रता अथवा दोषरहित जीवन ही नहीं है, बल्कि इसका विशेष अभिप्राय शास्त्रोंद्वारा और आप्त पुरुषोंद्वारा प्रतिपादित कर्मोंका अनुष्ठान करना है ।

सृष्टिके आरम्भसे ही जैसे श्रुति-स्मृतिको धर्मका निर्णायक माना गया है, उसी प्रकार सदाचारको भी धर्मका निर्णायक माना गया है । धर्मके लक्षणोंकी व्याख्या करते हुए मनु भगवान्ने, जो आदि-विधायक कहे जाते हैं, कहा है—

वेदः स्मृतिः सदाचारः स्वस्य च प्रियमात्मनः ।
एतच्चतुर्विधं प्राहुः साक्षाद्धर्मस्य लक्षणम् ॥

धर्मके जो चार लक्षण बताये गये हैं, उनमें वेद और स्मृतिके साथ-साथ सदाचार और अपनी आत्माको प्रिय लगनेवाला आचरण भी धर्म कहा गया है ।

श्रीरामनाम-माहात्म्य

[महात्मा श्रीसीतारामदास ॐकारनाथजीकी कृपासे प्राप्त]

महाशम्भु-संहितामें

श्रीरामनामाखिलमन्त्रबीजं
संजीवनं चेद् हृदये प्रविष्टम्।
हालाहलं वा प्रलयानलं वा
मृत्योर्मुखं वा विशतां कुतो भीः॥
रामनामप्रभावेण स्वयम्भूः सृजते जगत्।
बिभर्त्ति सकलं विष्णुः शिवः संहरते पुनः॥
यस्य प्रसादाद्देवेशि मम सामर्थ्यमीदृशम्।
संहरामि क्षणादेव त्रैलोक्यं सचराचरम्॥

निखिलमन्त्रबीज श्रीरामनामरूप संजीवनी बूटी यदि हृदयमें प्रविष्ट हो जाय तो हलाहल विष, प्रलयाग्नि अथवा मृत्युके मुखमें प्रवेश करनेपर भी कोई भय नहीं है।

रामनामके प्रभावसे ब्रह्मा जगत्‌की रचना करते हैं, विष्णु सबका पालन करते हैं और शिव संहार करते हैं।

हे देवेशि! राम-नामके प्रसादसे मुझमें ऐसी सामर्थ्य है कि मैं क्षणमात्रमें सचराचर त्रिभुवनका संहार कर सकता हूँ।

अगस्त्य-संहितामें

अहं भवन्नाम जपन् कृतार्थो
वसामि काश्यामनिशं भवान्या।
मरिष्यमाणस्य विमुक्तयेऽहं
दिशामि मन्त्रं तव रामनाम॥
रकारो रामचन्द्रः स्यात् सच्चिदानन्दविग्रहः।
आकारो जानकी प्रोक्ता मकारो लक्ष्मणः स्वराट्॥
नामसंकीर्तनं चैव गुणानामपि कीर्तनम्।
भक्त्या श्रीरामचन्द्रस्य वचसः शुद्धिरिष्यते॥

भगवान् शंकर श्रीरामसे कहते हैं—मैं तुम्हारा नाम-जप करते हुए कृतार्थ होकर भवानीके साथ काशीमें निरन्तर वास करता हूँ। मरनेवालोंकी मुक्तिके लिये उनके कानोंमें राम-नामरूप मन्त्र प्रदान करता हूँ।

'र' सच्चिदानन्दविग्रह रामचन्द्रजीका स्वरूप है, 'आ' जानकीजी कही गयी हैं और 'म' स्वप्रकाश लक्ष्मणजी हैं।

भक्तिपूर्वक श्रीरामचन्द्रजीका नाम-संकीर्तन और गुणोंका कीर्तन वाणीको शुद्ध करता है।

विश्वामित्र-संहितामें

राम-रामेति यो नित्यं मधुरं जपति क्षणम्।
सर्वसिद्धिमवाप्नोति सत्यं नैवात्र संशयः॥
धन्याः पुण्याः प्रपन्नास्ते भाग्ययुक्ताः कलौ युगे।
संविहायाथ योगादीन् रामनामैकनैष्ठिकाः॥
सर्वमन्त्रमयं नाम मन्त्रास्पदमनुत्तमम्।
स्वाभाविकीं परां सिद्धिं दुर्लभां तज्जपाल्लभेत्॥
वृथा नानाप्रयोगेषु मन्त्रतन्त्रेषु मानवाः।
यत्नं कुर्वन्त्यहो मूढास्त्यक्त्वा श्रीरामसुन्दरम्॥
अन्धानां नेत्रमुत्कृष्टं स्वच्छं श्रीनाममङ्गलम्।
बधिराणां तथा कर्णौ पङ्गूनां हस्तपादकौ॥

जो क्षणमात्र भी नित्य 'राम-राम'—इस मधुर नामका जप करता है, वह सचमुच सब प्रकारकी सिद्धिको प्राप्त करता है, इसमें कोई संदेह नहीं है। कलियुगमें धन्य, पुण्यवान् और भाग्यशाली वे शरणापन्न लोग हैं, जो योग-ज्ञान-कर्म आदि मार्गोंको त्यागकर एकमात्र राम-नाममें परिनिष्ठित हैं।

नाम सर्वमन्त्रमय है, वह मन्त्रका भी सर्वोत्कृष्ट प्रतिष्ठा-स्थान है, नाम-जपसे मनुष्य दुष्प्राप्य स्वाभाविकी परा सिद्धि प्राप्त कर लेता है।

अहा! सुन्दर श्रीराम-नामको त्यागकर मूढ़ मानव नाना प्रकारके अनुष्ठान और मन्त्र-तन्त्रमें व्यर्थ यत्न करता रहता है।

कल्याणजनक श्रीरामनाम अंधोंके लिये उत्कृष्ट निर्मल नेत्र है, बहरोंके लिये कर्णयुगल तथा पङ्गुओंके लिये हाथ-पैर है।

सौर-संहितामें

श्रीरामनाम सततं परिकीर्त्तनीयं
वर्त्तेत मोदसुनिधानमशेषसारम्।
जन्मार्जितानि विविधानि विहाय दुःखा-
न्यत्यन्तधर्मनिचयं परधाम याति॥

आनन्दके सुन्दर आकर तथा सबके साररूप श्रीरामनामका निरन्तर सर्वतोभावेन कीर्तन करना चाहिये। इसके द्वारा बहुजन्मार्जित विविध प्रकारके दुःखोंका त्याग कर तथा आत्यन्तिक (स्थायी) धर्मसमूहको प्राप्तकर जीव अन्तमें परमधामको गमन करता है।

जाबालि-संहितामें

रामनामप्रभा दिव्या यस्योरसि प्रकाशते।
तस्यास्ति सुलभं सर्वं सौख्यं सर्वेशजं फलम्॥
नाम्नि यस्य रतिर्नास्ति स वै चण्डालतोऽधिकः।
सम्भाषणं न कर्तव्यं तस्समं नामतत्परैः॥

रामनामकी अलौकिक प्रभा जिसके हृदयमें प्रकाशित है, उसको सर्वेशकी कृपादृष्टिके फलस्वरूप सारे सुख सुलभ हो जाते हैं। इसके विपरीत, जिसका नाममें अनुराग नहीं है, वह व्यक्ति चण्डालसे भी अधम है। नाम-परायणजनोंके लिये उसके साथ बात करना भी उचित नहीं।

ब्रह्म-संहितामें

रामेति वर्णद्वयमादरेण
सदा स्मरन्मुक्तिमुपैति जन्तुः।
कलौ युगे कल्मषमानसाना-
मन्यत्र धर्मे खलु नाधिकारः॥

'राम'—इन दो अक्षरोंका सतत आदरपूर्वक स्मरण करते हुए जीव मुक्तिलाभ करता है। कलियुगमें मलिन चित्तवालोंका [धृति, क्षमा, दम, अस्तेय, शौच, इन्द्रियनिग्रह, धी, विद्या, सत्य और अक्रोध आदि] अन्य धर्मोंमें (सामर्थ्यहीनताके कारण) अधिकार नहीं है।

तापनीय-संहितामें

स्वप्नेऽपि यो वदेन्नित्यं रामनाम परात्परम्।
सोऽपि पातकराशीनां दाहको भवति ध्रुवम्॥

जो मनुष्य स्वप्नमें भी परात्पर राम-नामका नित्य उच्चारण करता है, वह निश्चय ही पाप-समूहको दग्ध कर देता है।

हिरण्यगर्भ-संहितामें

अभिरामेति यन्नाम कीर्तितं विवशैश्च यैः।
तेऽपि ध्वस्ताखिलाघौघा यान्ति रामास्पदं परम्॥

जो बरबस—'अभिराम' कहकर अर्थात् 'अभिराम' शब्दका उच्चारण करके भी राम-नामका कीर्तन करते हैं, वे भी सम्पूर्ण पापोंका नाश करके श्रेष्ठ रामपदको प्राप्त होते हैं।

पुलह-संहितामें

सावित्री ब्रह्मणा सार्द्धं लक्ष्मीर्नारायणेन च।
शम्भुना रामनामेति पार्वती जपति स्फुटम्॥
रकारोच्चारणेनैव बहिर्निर्यांति पातकम्।
पुनः प्रवेशकाले च मकारस्तु कपाटकम्॥

सावित्री ब्रह्माके साथ, लक्ष्मी नारायणके साथ और पार्वती शंकरके साथ रामनाम स्पष्टरूपसे जपती हैं।

'र'कार उच्चारण करते ही पाप बाहर निकल जाता है, और उसके पुनः प्रवेशके समय 'म'कार कपाटके समान होकर उसको प्रवेश नहीं करने देता।

पतञ्जलि-संहितामें

कलौ युगे राघवनामतः सदा
परं पदं यान्ति विना प्रयत्नम्।
सर्वैर्युगैः पूजितमुन्नतं युगं
समस्तकल्याणनिकेतनं परम्॥

कलियुग सब युगोंके द्वारा पूजित और उन्नत युग है तथा समस्त कल्याणका श्रेष्ठ निकेतन है। इस कलियुगमें बिना प्रयत्नके रामनामके द्वारा मनुष्य परमपदको प्राप्त होता है।

सनत्कुमार-संहितामें

श्रीराम-रामेति जना ये जपन्ति च सर्वदा।
तेषां भुक्तिश्च मुक्तिश्च भविष्यति न संशयः॥
मानसं वाचिकं पापं कर्मणा समुपार्जितम्।
श्रीरामस्मरणेनैव तत्क्षणान्नश्यति ध्रुवम्॥
श्रीरामेति परं जाप्यं तारकं ब्रह्मसंज्ञकम्।
ब्रह्महत्यादिपापघ्नमिति वेदविदो विदुः॥

जो मनुष्य सदा श्रीराम-नामका जप करते हैं, उनको भोग और मोक्ष दोनों प्राप्त होते हैं—इसमें कोई संदेह नहीं है।

मानस, वाचिक और कर्मजनित पाप श्रीरामके स्मरणमात्रसे तत्काल निश्चयपूर्वक नष्ट हो जाते हैं।

वेदवेत्ता कहते हैं कि श्रीराम-नाम, जो 'तारक ब्रह्म' भी कहलाता है, ब्रह्महत्या आदि पापोंका नाश करनेवाला है, वह जप करनेयोग्य मन्त्रोंमें सर्वश्रेष्ठ है।

सुश्रुत-संहितामें

रामनाम्नः परं किंचित्तत्त्वं वेदे स्मृतिष्वपि।
संहितासु पुराणेषु नैव तन्त्रेषु विद्यते॥
कारणं प्रणवस्यापि रामनाम जगद्गुरुः।
तस्माद् ध्येयं सदा चित्ते यतिभिः शुद्धमानसैः॥

वेद-स्मृति, संहिता-पुराण और तन्त्रोंके भीतर रामनामसे श्रेष्ठ कोई भी तत्त्व नहीं है।

प्रणवका भी कारण जगद्गुरु राम-नाम है, अतएव शुद्धचित्त यतिगणको निरन्तर चित्तमें राम-नामका ध्यान करना चाहिये।

श्रीश्रीराम-नाम-माहात्म्य

(लेखक—महात्मा श्रीसीतारामदास ओंकारनाथ महाराज)

[गताङ्क पृ० ८३३ से आगे]

वराहपुराणमें—

दैवाच्छूकरशावकेन निहतो म्लेच्छो जराजर्जरो
हारामेण हतोऽस्मि भूमिपतितो जल्पंस्तनुं त्यक्तवान्।
तीर्णो गोष्पदवद् भवार्णवमहो नाम्नः प्रभावाद्धरेः
किं चित्रं यदि रामनामरसिकास्ते यान्ति रामास्पदम् ॥

"दैवात् शूकर-शावकके द्वारा जरा-जर्जरित एक म्लेच्छ मारा गया। 'हरामके द्वारा मैं मारा गया'—कहते हुए वह भूतलपर गिरकर पञ्चत्वको प्राप्त हुआ। आश्चर्यकी बात है कि 'हराम' शब्दके अन्तर्गत 'राम' नामके प्रभावसे वह भी गोष्पदके समान इस भयानक भवसागरके पार चला गया। तो फिर यदि रामनामके रसिक रामके परमपदको प्राप्त करें तो इसमें आश्चर्य ही क्या है।"

स्कन्दपुराणमें—

सर्वेऽवताराः श्रीरामनामशक्तिसमुद्भवाः।
सत्यं वदामि देवेशि नाममाहात्म्यमद्भुतम् ॥

तत्रैव—

इति पृष्टस्तदा शम्भुरुवाच हरिसेवकः।
हरेर्नामसहस्राणां सारं ध्यायामि नित्यशः ॥

× × ×

वेदसारमिदं नित्यं द्व्यक्षरं सततोद्यतम्।
निर्मलं ह्यमृतं शान्तं सद्रूपमसृतोपमम् ॥

"सभी अवतार श्रीरामनामकी शक्तिसे उत्पन्न होते हैं। हे देवेशि ! मैं सत्य कहता हूँ, नामका अद्भुत माहात्म्य है।"

"इस प्रकार पूछे जानेपर हरिसेवक श्रीशङ्करजी बोले—'मैं सहस्रों हरिनामके सारका नित्य ध्यान करता हूँ।"

"इस वेदोंके सारस्वरूप, जीवोंके कल्याणके लिये सतत उद्यत, निर्मल अमृतस्वरूप, शान्त और सद्रूप सुधोपम द्व्यक्षर 'राम' नामका मैं नित्य जप करता हूँ।"

× × ×

रामेति द्व्यक्षरो मन्त्रो मन्त्रकोटिशताधिकः ॥
सर्वासां प्रकृतीनां च कथितः पापनाशकः।
चातुर्मास्येऽथ सम्प्राप्ते सोऽप्यनन्तफलप्रदः ॥

× × ×

न रामादधिकं किंचित् पठनं जगतीतले।
रामनामाश्रया ये वै न तेषां यमयातना ॥

"'राम' यह दो अक्षरका मन्त्र शतकोटि मन्त्रोंसे बढ़कर है। यह सारे प्रजावर्गके पापोंका नाश करनेवाला कहा गया है तथा चातुर्मास्यमें रामनामका जप अनन्त फल प्रदान करता है।

"रामनामसे बढ़कर इस पृथ्वीपर कुछ भी पठनीय (जपनीय) नहीं है। जो लोग रामनामका आश्रय लेते हैं, उनको यम-यातना नहीं भोगनी पड़ती।"

रमते सर्वभूतेषु स्थावरेषु चरेषु च।
अन्तरात्मस्वरूपेण यच्च रामेति कथ्यते ॥
रामेति मन्त्रराजोऽयं भवव्याधिनिषूदकः।
रणे विजयदश्चापि सर्वकामार्थसाधकः ॥
सर्वतीर्थफलः प्रोक्तो विप्राणामपि कामदः।
रामचन्द्रेति रामेति रामेति समुदाहृतः ॥
द्व्यक्षरो मन्त्रराजोऽयं सर्वकार्यकरो भुवि।
देवा अपि प्रगायन्ति रामनाम गुणाकरम् ॥
तस्मात्त्वमपि देवेशि रामनाम सदा वद।
रामनाम जपेद् यो वै मुच्यते सर्वकिल्बिषैः ॥
सहस्रनामजं पुण्यं रामनाम्नैव जायते।
चातुर्मास्ये विशेषेण तत्पुण्यं दशधोत्तरम् ॥
हीनजातिप्रजातानां महद्दहति पातकम् ॥

रामो ह्ययं विश्वमिदं समग्रं
स्वतेजसा व्याप्य जनान्तरात्मना।
पुनाति जन्मान्तरपातकानि
स्थूलानि सूक्ष्माणि क्षणाच्च दग्ध्वा ॥

"राम स्थावर-जंगम सभी भूतोंमें अन्तरात्मस्वरूपसे रमण करते हैं, इसी कारण 'राम' कहलाते हैं।

"'राम'—यह मन्त्रराज भवरोग-विनाशक है, समरमें विजय प्रदान करता है और सभी कार्यों एवं प्रयोजनोंको सिद्ध करनेवाला है। उत्तमरूपसे उच्चारित 'रामचन्द्र' अथवा 'राम-राम'—यह नाम सभी तीर्थोंके सेवनका फल देनेवाला तथा विप्रोंके लिये कामद—कामनाओंको पूर्ण करनेवाला कहा गया है।

"इस भूतलमें यह द्व्यक्षर मन्त्रराज 'राम'नाम सब कार्य करता है। देवगण भी गुणाकर रामनामका सर्वतोभावेन गान करते हैं। हे देवेशि! इस कारण तुम भी राम-नामका सतत गान करो। जो भी राम-नामका जप करता है, वह सारे पापोंसे मुक्त हो जाता है।

"रामनामसे ही सहस्रनामजपका पुण्य प्राप्त होता है। विशेषतः चातुर्मास्यमें उससे दसगुना अधिक पुण्य होता है। हीन जातिमें उत्पन्न प्राणियोंके भी महान् पातक रामनामके जपसे भस्मीभूत हो जाते हैं।

"ये श्रीराम ही सबके अन्तरात्माके रूपमें अपने तेजके द्वारा इस सम्पूर्ण विश्वको व्याप्त करके अवस्थित हैं। जन्म-जन्मान्तरके सूक्ष्म-स्थूल सारे पापोंको क्षणमात्रमें भस्मीभूत करके वे प्राणीको पवित्र कर देते हैं।"

स्कन्दपुराण ब्रह्मखण्ड, धर्मारण्यखण्डके ३४वें अध्यायमें—

अशने शयने पाने गमने चोपवेशने।
सुखे वाप्यथवा दुःखे रामचन्द्रं समुच्चरेत्॥
न तस्य दुःखदौर्भाग्यं नाधिव्याधिभयं भवेत्।
रामेति नाम्ना मुच्येत पापाद् वै दारुणादपि।
नरकं नहि गच्छेत गतिं प्राप्नोति शाश्वतीम्॥
आकृष्टिः कृतचेतसां सुमहतामुच्चाटनं चांहसा-
माचाण्डालममूकलोकसुलभो वश्यश्च मोक्षश्रियः।
नो दीक्षां न च दक्षिणां न च पुरश्चर्यां मनागीक्षते
मन्त्रोऽयं रसनास्पृगेव फलति श्रीरामनामात्मकः॥
श्रीरामः शरणं समस्तजगतां रामं विना का गती
रामेण प्रतिहन्यते कलिमलं रामाय कार्यं नमः।
रामात् त्रस्यति कालभीमभुजगो रामस्य सर्वं वशे
रामे भक्तिरखण्डिता भवतु मे राम त्वमेवाश्रयः॥

'भोजन करते समय, सोते समय, पानी पीते समय, चलते और बैठते समय, सुख अथवा दुःखमें राम-नामका उच्चारण करता रहे। इससे मनुष्यको दुःख-दुर्दैवका सामना नहीं करना पड़ता, आधि-व्याधिका भय नहीं होता। राम-नामके जपसे मनुष्य दारुण पापसे भी मुक्त हो जाता है, वह नरकमें न जाकर शाश्वत मुक्तिको प्राप्त करता है। प्रज्ञा-वान् पुरुषोंके चित्तको आकृष्ट करनेवाले, बड़े-से-बड़े पापोंका उच्चाटन कर देनेवाले, चाण्डालपर्यन्त वाक्शक्ति-सम्पन्न जीव-मात्रके लिये सुलभ तथा मोक्षश्रीको करनेवाले श्रीराम-नाम-रूप मन्त्रके लिये किसी प्रकारकी तान्त्रिक या वैदिक दीक्षा, दक्षिणा या पुरश्चरणादि विधिकी तनिक भी अपेक्षा नहीं होती। यह मन्त्र रसनाके स्पर्शमात्रसे सारे फल देता है।

"श्रीराम समस्त जगत्के रक्षक हैं, रामके बिना जीवके लिये क्या अन्य कोई गति है? राम सारे कलिकल्मषका नाश करते हैं, रामको नमस्कार करना चाहिये। कालरूपी भयंकर भुजंगम रामसे डरता रहता है। सब रामके वशमें हैं। राममें मेरी अखण्डिता भक्ति हो। हे राम! तुम ही मेरे आश्रय हो।"

वामनपुराणमें—

परदाररतो वापि परापकृतिकारकः।
स शुद्धो मुक्तिमायाति रामनामानुकीर्तनात्॥

"परदारानुरक्त अथवा परापकार करनेवाला मनुष्य भी रामनामका निरन्तर कीर्तन करते रहनेसे शुद्ध होकर मुक्तिको प्राप्त कर लेता है।"

कूर्मपुराणमें—

गोप्याद् गोप्यतमं भद्रे सर्वस्वं जीवनं मम।
धिक्कृतं तमहं मन्ये सत्यं हि प्राणवल्लभे।
यज्जिह्वाग्रे न श्रीरामनाम संराजते सदा॥

"हे भद्रे! गुह्यसे भी गुह्यतम श्रीरामनाम मेरा सर्वस्व ही नहीं, मेरा जीवन है। हे प्राणवल्लभे! जिसकी रसनाके अग्रभागमें सर्वदा श्रीराम-नाम नहीं विराजता, उसको मैं सचमुच निन्दित समझता हूँ।"

मत्स्यपुराणमें—

ध्येयं ज्ञेयं पदं सेव्यं रामनामाक्षरं मुने।
सर्वसिद्धान्तसारं हि सुखसौभाग्यकारणम्॥
नामैव परमं ज्ञानं ध्यानं योगस्तथा रतिः।
विज्ञानं परमं गुह्यं रामनामैव केवलम्॥

"हे मुने! सब सिद्धान्तोंका सार यह है कि सुख और सौभाग्य प्रदान करनेवाला दो अक्षरका रामनाम ही ध्यान करने-योग्य है, ज्ञातव्य है और परम सेव्य है। नाम ही परम ज्ञान,

ध्यान, योग तथा अनुरक्ति है। परम गोपनीय विज्ञान केवल रामनामको जानो।''

गरुडपुराणमें—

श्रीराम राम रामेति ये वदन्त्यपि पापिनः।
पापकोटिसहस्रेभ्यस्तेषामुत्तरणं ध्रुवम्॥
कलौ संकीर्तनाद्देवि सर्वपापं व्यपोहति।
तस्माच्छ्रीरामनाम्नस्तु कार्यं संकीर्तनं परम्॥

''पापी होकर भी जो लोग 'श्रीराम राम राम' इस प्रकार राम-नामका उच्चारण करते हैं, वे सहस्रकोटि पापोंसे निश्चय ही मुक्त हो जाते हैं। हे देवि! कलियुगमें नाम-संकीर्तनसे सारे पाप निर्मूल हो जाते हैं। अतएव इस श्रेष्ठ श्रीरामनामका संकीर्तन परम कर्तव्य है।''

ब्रह्माण्डपुराणमें—

रामनामप्रभा दिव्या वेदवेदान्तपारगा।
येषां स्वान्ते सदा भाति ते पूज्या भुवनत्रये॥

'वेद और वेदान्तकी सीमाको भी लाँघ जानेवाली राम-नामकी दिव्य प्रभा जिसके हृदयको सदा आलोकित करती है, वे त्रिभुवनमें पूजनीय हैं।'

उपपुराण—

गणेशपुराणमें—

अहं पूज्योऽभवं लोके श्रीमन्नामानुकीर्तनात्।
अतः श्रीरामनाम्नस्तु कीर्तनं सर्वदोचितम्॥
रामनाम परं ध्येयं ज्ञेयं पेयमहर्निशम्।
सर्वदा सद्भिरित्युक्तं पूर्वं मां जगदीश्वरैः॥

श्रीगणेशजी कहते हैं—'मैं श्रीमद् राम-नामका निरन्तर कीर्तन करनेके कारण ही जगत्में सर्वप्रथम पूजनीय बना हूँ। अतएव श्रीराम-नामका कीर्तन करना सदा ही वाञ्छनीय है।'

'पूर्वकालमें मुझसे श्रेष्ठ जगदीश्वरोंने राम-नामको परम ध्येय, ज्ञेय तथा दिवानिशि पेय बतलाया है।'

वायुपुराणमें—

यातना यमलोकेषु तावदेव भवेन्नृणाम्।
यावन्न भजते प्रीत्या रामनाम परात्परम्॥

'यमलोकमें जीवको तभीतक यन्त्रणा भोगनी पड़ती है, जबतक वह प्रेमसहित परात्पर रामनामका भजन नहीं करता।'

सर्वेषामवताराणां कारणं परमाद्भुतम्।
श्रीमद् रामेति नामैव कथ्यते सद्भिरन्वहम्॥

'साधुजनोंने सदा ही श्रीमद् राम-नामको सब अवतारोंका परम अद्भुत कारण बतलाया है।'

नरसिंहपुराणमें—

रामनामरता नारी सुतं सौभाग्यमीप्सितम्।
भर्तुः प्रियत्वं लभते न वैधव्यं कदाचन॥
पतिव्रतानां सर्वासां रामनामानुकीर्तनम्।
ऐहिकामुष्मिकं सौख्यदायकं सर्वशो मुने॥

'राम-नाममें अनुरागवती रमणी पुत्र, अभिवाञ्छित सौभाग्य तथा पतिका प्रियत्व प्राप्त करती है; वह कभी विधवा नहीं होती।

'हे मुने! समस्त पतिव्रता नारियोंके लिये राम-नामकीर्तन इस लोक और परलोकमें निखिल सुखदायक है।'

अन्यत्र भी—

रामनाम जपतां कुतो भयं
सर्वतापशमनैकभेषजम्।
पश्य तात मम गात्रसंगतः
पावकोऽपि सलिलायतेऽधुना॥

प्रह्लादजी कहते हैं—'सारे तापोंको शान्त करनेकी एकमात्र औषध राम-नामका जप करनेवालेको भय कहाँ? पिताजी! आप देखिये तो, मेरे शरीरसे संलग्न अग्नि भी इस समय सलिलके समान शैत्य प्रदान कर रही है।'

बृहद्विष्णुपुराणमें—

रामरामेति यो नित्यं मधुरं जपति क्षणम्।
सर्वसिद्धिं समाप्नोति रामनामानुभावतः॥

''जो मनुष्य प्रतिदिन क्षणमात्र भी 'राम-राम'—इस मधुर नामका जप करता है, राम-नामके प्रभावसे उसे सभी सिद्धियाँ सम्यक्‌रूपसे प्राप्त होती हैं।''

बृहन्नारदीयपुराणमें—

स्मरणात् कीर्तनाच्चैव श्रवणाल्लेखनादपि।
दर्शनाद्धारणादेव रामनामाखिलेष्टदम्॥

'राम-नाम स्मरण अथवा कीर्तन या श्रवण अथवा लेखन या दर्शन या धारण करनेपर भी इस लोकमें तथा परलोकमें निखिल ईप्सित फल प्रदान करता है।'

मित्रद्रोही कृतघ्नश्च स्तेयी विश्वासघातकः।
दुहित्रासंगमी दुष्टो भ्रातृपत्नीरतस्तथा॥
विप्रदाररतो यस्तु विप्रवित्तापहारकः।
परापवादकारी च बालघाती च वृद्धहा॥

स्त्रीजनानां च संघाती हिंसकः सर्वदेहिनाम् ।
मातृगामी गुरुद्रोही रामनाम्ना विशुध्यति ॥
महाचिन्तातुरो यस्तु महाव्याधिसमाकुलः ।
जरापस्मारकुष्ठादिमहारोगैः प्रपीडितः ॥
महोत्पातमहारिष्टमहाक्रूरग्रहार्दितः ।
महाशोकाग्निसंतप्तः सर्वलोकैस्तिरस्कृतः ॥
महानिन्द्यो निरालम्बो महादुर्भाग्यदुःखितः ।
महादरिद्रः संतापी सुखी स्याद् रामकीर्तनात् ॥
कामक्रोधातुरः पापी लोभमोहमदोद्धतः ।
रागद्वेषादिभिर्दग्धो महादुर्वासनावृतः ॥
षड्भिरूर्मिभिराक्रान्तः षड्विकारैर्विखिद्यते ।
मनोरागकषायाद्यैर्व्याकुलः समुपद्रवैः ॥
अन्यैश्च विविधोत्पातैर्दारुणैरतिदुःखितः ।
रामनामानुभावेन परानन्दमवाप्नुयात् ॥

'मित्र-द्रोही, कृतघ्न, चोर, विश्वासघाती, पुत्री-गामी, दुष्ट, भ्रातृपत्नीरत, विप्रपत्नीरत, विप्रवित्तापहारक, परनिन्दक, बालघाती, वृद्धहत्याकारी, नारीकी हत्या करनेवाला, सर्व-प्राणियोंकी हिंसा करनेवाला, मातृगामी, गुरुद्रोही—ये सब राम-नामसे विशुद्ध हो जाते हैं ।

'जो मनुष्य महाचिन्ताग्रस्त हो, महान् व्याधिसे व्याकुल हो, ज्वर-अपस्मार-कुष्ठ आदि महारोगोंसे पीड़ित हो, महोत्पात, महारिष्ट एवं महाक्रूर ग्रहोंद्वारा पीड़ित हो, महान् शोकाग्निसे संतप्त हो, सारे समाजसे तिरस्कृत हो, अत्यधिक निन्दनीय, अवलम्बनशून्य हो, महादुर्भाग्यसे दुःखित हो, महादारिद्र्यसे ग्रस्त हो, मनस्तापयुक्त हो, वह भी रामनामके कीर्तनसे सुखी हो जाता है ।

'काम-क्रोधसे आतुर, पापी, लोभ-मोह-मदसे अत्यधिक उद्धत, रागद्वेषादिसे दग्ध, महादुर्वासनाओंसे समाच्छन्न, षड् ऊर्मियोंसे* आक्रान्त, षड्विकारों† द्वारा विशेष-रूपसे खिन्न, कष्टप्रद उपद्रवों और रागद्वेषादिसे व्याकुल तथा अन्य विविध भयानक उत्पातोंसे अत्यन्त दुःखित व्यक्ति भी राम-नामके प्रभावसे परमानन्दको प्राप्त होता है ।'

नन्दिपुराणमें—

सर्वदा सर्वकालेषु ये च कुर्वन्ति पातकम् ।
रामनामजपं कृत्वा यान्ति धाम सनातनम् ॥

'जो लोग सदा-सर्वदा पाप करते हैं, वे राम-नामका जप करके सनातन—चिरस्थायीधाम परम पदको जाते हैं ।'

आदित्यपुराणमें—

रामनामजपादेव भासकोऽहं विशेषतः ।
तथैव सर्वलोकानां क्रमणे शक्तिमानहम् ॥
नामविश्रम्भहीनानां साधनान्तरकल्पना ।
कृता महर्षिभिः सर्वैः परानन्दैकनिष्ठितैः ॥

सूर्यनारायण कहते हैं—'विशेषतः राम-नामका जप करनेके कारण ही मैं जगत्का प्रकाशक हूँ तथा सम्पूर्ण लोकोंका पर्यटन करनेमें मैं समर्थ हूँ ।'

'एकमात्र परमानन्दमें स्थित सारे महर्षिगणने भगवन्नाममें विश्वासहीन लोगोंके लिये अन्य साधनोंकी कल्पना की है ।'

आङ्गिरसपुराणमें—

श्रीरामेति मनुष्यो यः समुच्चरति सर्वदा ।
जीवन्मुक्तो भवेत्सोऽपि साक्षाद्रामात्मकः सुधीः ॥

'जो मनुष्य सर्वदा श्रीराम-नामका उच्चारण करता है, वह साक्षात् रामात्मक—राममय, सुबुद्धि और जीवन्मुक्त हो जाता है ।'

शुकपुराणमें—

यत्प्रभावं समासाद्य शुको ब्रह्मर्षिसत्तमः ।
जपस्व तन्महामन्त्रं रामनाम रसायनम् ॥

'जिसके प्रभावको सम्यक्रूपसे प्राप्तकर शुकदेवजी श्रेष्ठ ब्रह्मर्षि हुए हैं, उस रसायनरूप राम-नाम-महामन्त्रका जप करो ।'

लघुभागवतमें—

किं तात वेदागमयोगशास्त्रै-
स्तीर्थादिकैरन्यकृतैः प्रयोजनम् ।
यद्यात्मनो वाञ्छसि मुक्तिकारणं
श्रीरामरामेति निरन्तरं रट ॥

''हे वत्स ! वेदपाठ, आगमोंका अनुशीलन, योगाभ्यास, शास्त्रचर्चा तथा तीर्थसेवन आदि अन्य साधनोंका क्या प्रयोजन ? यदि तुम मुक्तिके कारणकी इच्छा करते हो, तो निरन्तर 'श्रीराम-राम'—इस नामकी रटना करो ।''

कालिकापुराणमें—

रामेत्यभिहिते देवे परात्मनि निरामये ।
असंख्यमखतीर्थानां फलं तेषां भवेद् ध्रुवम् ॥

''निरामय परमात्मा ज्योतिर्मय 'राम' नामका उच्चारण करनेसे नाम लेनेवालोंको निश्चयपूर्वक अगण्य मखों (यज्ञों) तथा तीर्थोंका फल प्राप्त होता है ।''

---

* भूख-प्यास, शोक-मोह और जरा-मृत्यु—ये छः ऊर्मियाँ हैं । † काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद और मात्सर्य—ये छः विकार हैं ।